UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 1 January, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

▸	उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिरूचि का अध्ययन **डॉ0 शिवम सक्सेना, डॉ0 अमर बहादुर एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	93-96
▸	विद्यालयी बच्चों पर प्राणायाम का सकारात्मक प्रभाव **अमृता कुमारी एवं आलोक कुमार पाण्डेय**	98-102
▸	प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की दंड के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन **मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, विनोद कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	103-106
▸	माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के स्तर का अध्ययन **गजानंद सैन एवं डॉ0 मोहनलाल मेघवाल**	107-109
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना का अध्ययन **महेश चंद जाटव, अमन कुमार एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	110-112
▸	आधुनिक भारत में प्रचलित पश्चिमी उपनिवेशवादी 'कास्ट' की संकल्पना का अवलोकन और समीक्षा **डॉ0 ओंकार चतुर्वेदी**	113-116
▸	उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन **जयसिंह जाटव, ज्योति कश्यप एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	117-120
▸	करौली जिले के सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन **श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, श्री छैल बिहारी शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	121-125
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों अध्यापकों एवं अभिभावकों के मध्य पाठ्यक्रम संतुष्टीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्रीमती मुकेशी मीना, श्री नितेंद्र कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	126-128
▸	स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन **श्री मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	129-132
▸	सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बी0एड0 में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का अध्ययन **विनोद कुमार शर्मा, मो0 आरिफ एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	133-136
▸	स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव **मोहम्मद रफी एवं डॉ0 माहेजबी**	137-139
▸	सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन **विष्णु कुमार शर्मा, डॉ0 विवेक मिश्रा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	140-142
▸	The state of Women's Education in India impacting their Work Participation Rates with Special Reference to the Handloom Industry of Pilkhuwa **Anamika Pandey**	143-152
▸	Exploring the Theoretical Foundations of Animal-Assisted Therapy in Alleviating Loneliness among the Geriatric Population **Devyani Awasthi**	153-157

UGC Approved Journal No. 48416 (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal) Impact Factor : 6.0
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 11, No. 1, January, 2024 ISSN : 2393-8358

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिरूचि का अध्ययन

डॉ0 शिवम सक्सेना
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)
डॉ0 अमर बहादुर
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)
डॉ0 मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)

सारांश

शिक्षा के माध्यम से मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है शिक्षा परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।

जॉन डी.वी. के अनुसार, "शिक्षा का अर्थ ही अनुभवों का निर्माण एवं पुनः निर्माण है और इस दृष्टि से विद्यालय के बाहर भी जो अनुभव प्राप्त किए जाते हैं वे सभी शिक्षा के अंग हैं।"

वर्तमान समय में उच्च जीवन शैली के कारण अध्यापक वर्ग अधिक से अधिक धन की कामना करता है जिससे वह व्यवस्थित रूप से अपनी पारिवारिक एवं अन्य उत्तरदायित्वों का निर्वहन भली प्रकार से कर सके अतः वह अपने अतिरिक्त समय में कोचिंग संस्थानों में अपनी सेवाएं देने लगते हैं।

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया। जनसंख्या में से यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में 200 विद्यार्थियों को रखा गया। न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए बालक एवं बालिकाओं को रखा गया। शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित अभिरुचि मापनी का प्रयोग किया गया जिसमें स्वनिर्मित 34 कथन है एवं तीन बिंदु मापनी जिसमें सहमत, असहमत अनिश्चित तीन बिंदु चयन के लिए हैं आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण हेतु "काई वर्ग परीक्षण" का प्रयोग किया गया है।

- *अर्थात "कोचिंग संस्थान ऑफलाइन माध्यम के द्वारा छात्रों के मध्य प्रतियोगिता को बढ़ाता है" के प्रति अधिकांश 77 प्रतिशत विद्यार्थी सकारात्मक सोच रखते हैं तथा लड़कों की अपेक्षा लड़कियों इस कथन के प्रति अधिक सकारात्मक सोच रखती हैं*
- *अर्थात "कोचिंग संस्थान ऑनलाइन माध्यम के द्वारा छात्रों में स्वाध्याय की प्रकृति को बढ़ावा देता है" के प्रति अधिकांश 67 प्रतिशत विद्यार्थी सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं तथा लड़कों की अपेक्षा लड़कियों इस कथन के प्रति अधिक सकारात्मक सोच रखती हैं।*

शोध समस्या की पृष्ठभूमि

प्रस्तावना

शिक्षा के माध्यम से मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है शिक्षा परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है

जॉन डी.वी. के अनुसार शिक्षा का अर्थ ही अनुभवों का निर्माण एवं पुनः निर्माण है और इस दृष्टि से विद्यालय के बाहर भी जो अनुभव प्राप्त किए जाते हैं वे सभी शिक्षा के अंग हैं

डॉ0 ए. एस. अल्तेकर ने अपना मत अक्षरबद्ध किया है "शिक्षा को प्रकाश और शक्ति का ऐसा स्रोत माना जाता था। जो हमारे शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरंतर एवं सामंजस्य पूर्ण विकास करके हमारे स्वभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ट बनती है।"

यू.एस. ब्यूरो ऑफ़ एजूकेशन के अनुसार शिक्षा हर व्यक्ति के ज्ञान, अभिरुचियों, आदतों, आदर्शो और क्षमताओं को विकसित करती है। इससे वह समाज में समुचित स्थान प्राप्त करता है ताकि इसका उपयोग कुलीन लक्ष्यो की संप्राप्ति के लिए अपने आपको तथा समाज को आकार प्रदान कर सके। शिक्षा आयोग (1964–66) ने भव्य अनुपात में परिवर्तन के लिए एक और केवल एक ही साधन के रूप में शिक्षा को प्रस्तुत किया है।

वर्तमान समय में उच्च जीवन शैली के कारण अध्यापक वर्ग अधिक से अधिक धन की कामना करता है जिससे वह व्यवस्थित रूप से अपनी पारिवारिक व अन्य उत्तरदायित्वों का निर्वहन भली प्रकार से कर सके अतः वह अपने अतिरिक्त समय में कोचिंग संस्थानों में अपनी सेवाएं देने लगते हैं एवं बढ़ती शैक्षिक प्रतिस्पर्धा

को देखते हुए विद्यार्थी एवं अध्यापक दोनों ही विद्यालय से शिक्षा से संतुष्ट नहीं हो पाते हैं अतः विद्यार्थी कोचिंग संस्थानों के भ्रामक प्रचारों से भ्रमित होकर कोचिंग संस्थानों में अध्ययन हेतु प्रेरित हो जाते हैं वहां अध्ययन करना शिक्षा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण के परिवर्तन के कारण शिक्षा का आवश्यक अंग माना जाने लगा है इस प्रक्रिया के कारण क्रमशः विद्यार्थी की अभिरुचि भी कोचिंग संस्थानों में अध्ययन के प्रति केंद्रित हो जाती है।

शोध समस्या का औचित्य

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में गुरु सांसारिक गतिविधियों से दूर वनों में गुरुकुल की स्थापना कर विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान किया करते थे। उनका जीवन सांसारिक सुखों से दूर पूर्ण सादगी पूर्ण हुआ करता था जिसके फल स्वरुप वह अपने विद्यार्थियों में उत्तम मानवीय गुणों को समाहित करते थे।

समयाकालीन परिवर्तन के कारण आज के वैश्वीकरण के युग में भौतिकतावादी संस्कृति पनप रही है जिसमें निर्वहन हेतु अत्यधिक धन की आवश्यकता वांछित है इस दशा में गुरु अपने आदर्शों के दम पर अपने परिवार का पालन पोषण अपर्याप्त वेतन से करने में अपने आप को असमर्थ पाता है। इस कारण वह अपने सामाजिक दायित्वों को पूर्ण करने के उद्देश्य से और अधिक धन की इच्छावश वह कोचिंग संस्थानों में अध्यापन हेतु प्रवृत्त होता है। जिससे अधिक धनोपाजर्न कर अपने परिवार का पालन पोषण वर्तमान सामाजिक स्तर के अनुरूप कर सके।

भारतवर्ष की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है जनसंख्या दबाव के कारण शैक्षिक संसाधनों में कमी और शैक्षिक प्रतिस्पर्धा भी बढ़ती जा रही है विद्यालयी शिक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की शैली में भिन्नता के कारण विद्यार्थी कोचिंग संस्थानों में अध्ययन हेतु उन्मुख हो जाते हैं।

भारतीय परिवारों के विघटन के कारण एकल परिवारों का जन्म हुआ जिससे अभिभावक समयाभाव के कारण बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते और प्रतियोगिता की भावना उच्च शिखर पर घर कर गई है कि जो इस दौड़ में पिछड़ गया समझो कि उसका जीवन नष्ट हो गया। इस प्रकार छात्रों की बढ़ती संख्या, विद्यालय एवं विद्यालयों में शिक्षकों की कमी, प्रतियोंगी परीक्षा की विषय वस्तु का ज्ञान ना होना, बदलते सामाजिक दृष्टिकोण विद्यार्थियों को कोचिंग संस्थानों में अध्ययन हेतु उनमें अभिरुचि को विकसित कर रहा है।

शोध का शीर्षक

"उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिरुचि का अध्ययन।"

शोध समस्या के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य अभिरुचि मापनी के द्वारा विद्यार्थियों की ऑनलाइन, ऑफलाइन कोचिंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है।

- विद्यार्थियों की ऑफलाइन कोचिंग के प्रति अभिरुचियों का अध्ययन करना
- विद्यार्थियों की ऑनलाइन कोचिंग के प्रति अभिरुचियों का अध्ययन करना

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

समस्या को समझने एवं उसके उचित निस्तारण हेतु परिकल्पनाओं का सहारा लिया जाता है। इसलिए प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

- ऑफलाइन कोचिंग के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभिरूचियों में सार्थक अन्तर नही पाया जाता हैं।
- ऑनलाइन कोचिंग के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभिरूचियों में सार्थक अन्तर नही पाया जाता हैं।

तकनीकी पदों की परिभाषाएं

कोचिंग संस्थाएं –

कोचिंग शब्द अंग्रेजी भाषा के (Coach) से बना है जिसका अर्थ है प्रशिक्षित करना अथवा सीखना अन्य शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि किसी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति हेतु छात्रों को निर्देशन परामर्श एवं प्रशिक्षण द्वारा अभ्यास कर कर लक्ष्य प्राप्ति हेतु तैयार करना।

अभिरुचि–

अभिरुचि एक मनोसामाजिक पहलू है जिसका निर्धारण स्वयं के स्वभाव, परिस्थितियों, परिवेश के द्वारा होता है। अभिरुचि से तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है जिसके द्वारा किन्ही वस्तुओं, व्यक्तियों, क्रियायोजनाओं के विषय में विशेष रुचि को प्रदर्शित करता है। अभिरुचि के निर्धारण में ज्ञानात्मक, भावात्मक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक कारक महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं।

शोध अध्ययन का प्रारूप

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया जनसंख्या में से यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यायाधीश के रूप में 200 विद्यार्थियों को रखा गया।

न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए बालक एवं बालिकाओं को रखा गया, शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित अभिरुचि मापनी का प्रयोग किया गया। जिसमें स्वनिर्मित 34 कथन है एवं तीन बिंदु मापनी का उपयोग जिसमें सहमत, असहमत तथा अनिश्चित तीन बिंदु चयन के लिए हैं। आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु ''काई वर्ग परिक्षण'' का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

सारणी–1 : ऑफलाइन कोंचिग के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभिरूचियों के आंकड़े प्रदर्शित करने वाली सारणी

समूह		प्रतिक्रिया वर्ग			योग	X^2	.01 सार्थकता स्तर
		सहमत	असहमत	अनिश्चित			
लडके	fo	76	16	8	100	0.1246	सार्थक नहीं है
	fe	77	15.5	7.5			
	%	76%	16%	8%			
लडकियां	fo	78	15	7	100		
	fe	77	15.5	7.5			
	%	78%	15%	7%			
कुल		154	31	15	200		
		77%	15.5%	7.5%			

व्याख्या– परिगणित काई वर्ग का मान .1246 है जो कि 2 df पर .01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 9.210 से कम है अतः यह मान सार्थक नहीं है इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। अर्थात ''कोचिंग संस्थाएं ऑफलाइन माध्यम के द्वारा छात्रों के मध्य प्रतियोगिता की भावना को बढ़ाता है'' के संबंध में लड़के और लड़कियों में सार्थक अंतर नहीं है।

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि इस कथन संख्या ऑफलाइन माध्यम के द्वारा के प्रतिकूल 77 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सहमत तथा 15.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने असहमत के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की है। लड़कों ने सहमत के प्रति 76 प्रतिशत तथा असहमत के प्रति 16 प्रतिशत प्रतिक्रिया व्यक्त की है जबकि लड़कियों ने सहमत के प्रति 78 प्रतिशत तथा असहमत के प्रति 15 प्रतिशत प्रतिक्रिया व्यक्त की है।
कथन संख्या–2 कोचिंग संस्थाएं ऑनलाइन माध्यम के द्वारा छात्रों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है।

सारणी–2 : ऑनलाइन कोंचिग के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभिरूचियों के आंकडे प्रदर्शित करने वाली सारणी

समूह		प्रतिक्रिया वर्ग			योग	X^2	.01 सार्थकता स्तर
		सहमत	असहमत	अनिश्चित			
लडके	fo	64	24	12	100	0.8932	सार्थक नहीं है
	fe	67	21.5	11.5			
	%	64%	24%	12%			
लडकियां	fo	70	19	11	100		
	fe	67	21.5	11.5			
	%	70%	19%	11%			
कुल		134	43	23	200		
		67%	21.5%	11.5%			

व्याख्या– परिगणित काई वर्ग का मान .8932 है जो कि 2 df पर .01 सार्थकता स्तर के सारणी का मान 9.210 से कम है। अतः यह मान सार्थक नहीं है। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है अर्थात ''कोचिंग संस्थाएं ऑनलाइन माध्यम के द्वारा छात्रों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है'' के संबंध में लड़के और लड़कियों में सार्थक अंतर नहीं है।

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है के इस कथन संख्या ऑनलाइन माध्यम के द्वारा के प्रति कुल 67 प्रतिशत ने सहमत तथा 21.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने असहमत के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की है

लड़कों ने सहमत के प्रति 64 प्रतिशत तथा असहमत के प्रति 24 प्रतिशत प्रतिक्रिया व्यक्त की है जबकि लड़कियों ने सहमत के प्रति 70 प्रतिशत तथा असहमत के प्रति 19 प्रतिशत प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

शोध अध्ययन समस्या का निष्कर्ष

निष्कर्ष–1

कथन संख्या–1 अर्थात कोचिंग संस्थाएं ऑफलाइन माध्यम के द्वांरा छात्रों के मध्य प्रतियोगिता को बढ़ाता है के प्रति अधिकांश 77 प्रतिशत विद्यार्थी सकारात्मक सोच रखते हैं तथा लड़कों की अपेक्षा लड़कियों इस कथन के प्रति अधिक सकारात्मक सोच रखती हैं।

कथन संख्या–2 अर्थात कोचिंग संस्थाएं ऑनलाइन माध्यम के द्वारा छात्रों में स्वाध्याय की प्रकृति को बढ़ावा देता है के प्रति अधिकांश 67 प्रतिशत विद्यार्थी सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं तथा लड़कों की अपेक्षा लड़कियों इस कथन के प्रति अधिक सकारात्मक सोच रखती हैं।

निष्कर्ष–2

कथन संख्या–1 मापनी में अत्यधिक 69 प्रतिशत भर प्रदर्शित करता है इससे यह निष्कर्ष सामने आता है की कोचिंग संस्थाएं विद्यार्थियों के मध्य बुद्धि परीक्षण तथा निष्पत्ति परीक्षण आदि के माध्यम से एक स्वस्थ प्रतियोगिता को विकसित करते हैं अतः इस प्रकार की प्रतियोगिता जीवन के प्रत्येक स्तर पर विकसित किए जाने की आवश्यकता है।

कथन संख्या–2 यह मापने का एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसके प्रति 67 प्रतिशत विद्यार्थी यह मानते हैं कि ऑफलाइन कोचिंग के कारण उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति बड़ी है क्योंकि ऑनलाइन माध्यम में स्वाध्याय अत्यंत आवश्यक है।

कथन संख्या–1 कोचिंग संस्थाएं ऑफलाइन माध्यम के द्वारा छात्रों के मध्य प्रतियोगिता की भावना को बढ़ाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. गुप्ता, एस.पी. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन 2003.
2. शुक्ला, पी.एन. एन इन्वेस्टिगेशन इन्टू द रोल ऑफ़ प्राइवेट कोचिंग इंस्टीट्यूट्स फॉर इंटरमीडिएट स्टूडेंट्स, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय 1982.
3. गौरेट, एच.ई., शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग,बॉम्बे वकील–फेफर एंड सीमन्स लि. 1981.